ISSN No 2347-7075
Impact Factor- 7.328
Volume-2 Issue-7

# INTERNATIONAL JOURNAL of ADVANCE and APPLIED RESEARCH

**Publisher: P. R. Talekar**
Secretary,
Young Researcher Association
Kolhapur(M.S), India

Young Researcher Association

| | | |
|---|---|---|
| 48 | शैलेश मटियानी की कहानियों में दलित जीवन<br>डॉ. संतोष बबनराव माने. | 127-128 |
| 49 | हिंदी कविता में दलित चेतना<br>डॉ. संतोष मोटवानी | 129-131 |
| 50 | भूमंडलीकरण और 'सेज पर संस्कृत' उपन्यास<br>डॉ. भगत सारिका आप्पा | 132-133 |
| 51 | 'यमदीप' में चित्रित किन्नरों का पारिवारिक संघर्ष<br>प्रा. डॉ. एस. बी. बिडकर | 134-135 |
| 52 | बारेला समाज में प्रचलित अनोखी एवं सर्वश्रेष्ठ परम्पराएं<br>डॉ. श्रीमती सेवन्ती डावर | 136-137 |
| 53 | 'सागर लहरें और मनुष्य' उपन्यास में चित्रित दलित मछुओरों का यथार्थ जीवन<br>डॉ. शाहीन अजज जमादार | 138-139 |
| 54 | हिन्दी साहित्य : दलित एवं आदिवासी विमर्श<br>डॉ. शिवकांता रामकिसन सुरकुटे | 140-141 |
| 55 | हिंदी साहित्य : किसान विमर्श<br>प्रा.कोकाटे शोभा नानाभाऊ | 142-143 |
| 56 | इक्कीसवीं सदी के हिंदी उपन्यासों में किसान विमर्श<br>डॉ. श्रीकांत पाटील | 144-145 |
| 57 | हिंदी उपन्यासों में चित्रित किन्नर विमर्श<br>प्रो. (डॉ.) सिद्धेश्वर विठ्ठल गायकवाड | 146-147 |
| 58 | मालती जोशी की कहानी 'उत्सव' में स्त्री-विमर्श<br>डॉ. स्नेहल श्रीकांत गर्जे-पाटील | 148-149 |
| 59 | मनोज सोनकर के काव्य मे : नारी विमर्श<br>प्रा. सोनाली रामदास हरदास | 150-153 |
| 60 | रामकुमार वर्मा लिखित एकलव्य खंडकाव्य में दलित चेतना<br>डॉ.सौदागर सालुंखे | 154-155 |
| 61 | समाज में किन्नरों की मुख्य समस्याएं<br>सुभाष विष्णू बामणेकर | 156-158 |
| 62 | जयकाली बहू<br>डॉ. सुचिता संतोष भोसले | 159-160 |
| 63 | आज का भारतीय किसान:एक विमर्श<br>डॉ.सुनील अभिमन्यु गायकवाड | 161-162 |
| 64 | हिंदी उपन्यास: किसान विमर्श<br>सुनील चांगदेव काकडे | 163-164 |
| 65 | मिले सुर मेरा तुम्हारा: किसान समस्या<br>डॉ. सुनिता हुन्नरगी | 165-167 |
| 66 | हिंदी साहित्य में किसान विमर्श<br>प्रा. डॉ. सुरेखा प्रे. मंत्री | 168-170 |
| 67 | डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर विचारधारा से प्रेरीत नारी (दलित समाज कि कहानियाँ : रत्नकुमार साम्भरिया के विशेष संदर्भ में)<br>प्रा. डॉ . सुवर्णा नरसू कांबळे | 171-173 |
| 68 | सुशीला टाकभौरे के 'शिकंजे का दर्द' आत्मकथा में चित्रित दलित नारी जीवन<br>तब्बसुम शकील पठाण | 174-175 |
| 69 | हिंदी साहित्य: नारी विमर्श<br>डॉ.वैशाली प्रशांत सामंत | 176-177 |
| 70 | कितने प्रश्न करूँ' खंडकाव्य के माध्यम से अभिव्यक्त नारी विमर्श<br>डॉ. वंदना पाटील | 178-180 |
| 71 | महिला कहानीकारों की कहानियों में महानगरीय विमर्श<br>डॉ विठ्ठलसिंह रूपसिंह घुनावत | 181-182 |

International Journal of Advance and Applied Research (IJAAR)
Peer Reviewed Bi-Monthly
ISSN – 2347-7075
Impact Factor –7.328
Vol.2 Issue. Mar - Apr 2022

# हिन्दी साहित्य : दलित एवं आदिवासी विमर्श

डॉ.शिवकांता रामकिसन सुरकुटे
*हिंदी विभाग, दयानंद कला महाविद्यालय, लातूर*
*ई-मेल : surkute05@gmail.com*

दलित-विमर्श नया है, लेकिन आदिवासी विमर्श की परिपाटी काफी पुरानी है | इसकी सशक्त वाचिक परंपरा रही है और यह अब लेखन के धरातल पर उतर रही है | इसने कविता को अपना मुख्य हथियार बनाया है क्योंकि आज भी आदिवासी समाज का बडा हिस्सा अशिक्षित एवं अभावग्रस्त है तथा गरीबी एवं भुखमरी का शिकार है |

' दलित विमर्श ' का सामान्य अर्थ पीडित शोषित दबाए गए लोगों में अपने अधिकारों के प्रति सजगता एवं जाग्रति से है | दलितों के बारे में किया गया विचार ही दलित विमर्श कहलाता है | सदियों से सामन्ती परंपरा सामाजिक विसंगतियों की दीवार को ढहा कर स्वाभिमान के महल का निर्माण करना दलित विमर्श का ही परिणाम है |

दलित का तात्पर्य- " समाज के उस पददलित वर्ग से है जिसे सदियों से ' अछुत ' कहकर उपेक्षित किया गया, हर प्रकार से उसका शोषण किया गया, उसे कोई अधिकार नहीं दिए गए, शिक्षा से वह वंचित रही और उसकी इच्छा शक्ति को पनपने नहीं दिया गया | "[1]

हिन्दी में 'दलित विमर्श का प्रारंभ प्रसिध्द कहानी पत्रिका सारिका के दो ' दलित विशेषांकों ' से माना जाता है जो क्रमश:अप्रैल 1975 एवं मई 1975 में निकले गए | हंस पत्रिका में भी इसके कर्ता-धर्ता राजेन्द्र यादव दलित विमर्श की चर्चा बराबर करते रहे हैं | हिन्दी के दलित कथाकारों में डॉ. एन.सिंह, ओम प्रकाश वाल्मीकि, रामशिरोमणि, जयप्रकाश कर्दम, माता-प्रसाद , अरविन्द राही, मलखन सिंह, मोहनदास, रघुवीर सिंह आदि के नाम लिए जा सकते है |

दलितों व्दारा लिखी गई ये कहानियां उनके स्वानुभूत अनुभवों पर आधृत होने के कारण उस सामाजिक अन्याय का घिनौना चेहरा यथार्ना में प्रस्तुत करती है जो समाज में ग्रामीण स्तर पर अब भी किसी न किसी रुप में विद्यमान है | यद्यपि रेणुजी ने अपनी कहनियों में इसे काफी पहले किसी न किसी रुम में अभिव्यक्ति देनी प्रारंभ कर दी थी | " 'उच्चाहन' कहानी में 'विलसिया' (रामविलास) इसी दलित वर्ग का पात्र है जो धन कमाकर गांव में लौटा है तो साथ में शहर की चेतना भी लाया है जहां दलित का तिरस्कार नहीं होता | मिसर को जली-कटी सुनाकर जैसे उनका जहर दांत उसने उखाड दिया था | छुलाछूत का जो विष जाति व्यवस्था में गहराई तक व्याप्त है उसके दुष्परिणाम दलितों को भोगने पडे हैं, इसमें दो राय नहीं है | "[2]

प्रेमचंद की ' सद्गति ' कहानी में दुखी चमार की जो अधोगति दिखाई है उसे दलित चेतना का उत्स माना जा सकता है " दुखी की जीवन पर्यंत की सेवा, भक्ति, श्रध्दा का कैसा फल उसे पुरोहित जी ने दिया है – इसे पढकर प्रत्येक सहदय की आंख डबडबा जाती है | "[3]

' दूध का दाम ' कहानी में प्रेमचंद जी ने गैर दलितों की धूर्तता एवं पाखण्ड के चक्र में फँसे दलित बालक के करुण यथार्थ का चित्रण किया है जो हर बार घोडा बनने से इसलिए इन्कार करता है, क्योंकि वह सवर्णो की चालाकी समझ चुका है | इस कहानी में गैर दलितों की अवसरवादिता अभिव्यक्त हुई है | जमीदार का बेटा मंगल की माँ का स्तनपान करके बडा हुआ है, पर बडा होने पर वही मंगल भंगी जाति का होने के कारण अस्पृश्य है | दुध का दाम उसे कुते की भाँति जूठन देकर चुकाया जाता है |

प्रेमचंद ने ' कर्मभूमि ' नामक उपन्यास में दलितों के मंदिर-प्रवेश का समर्थन किया है | वे दलितों के प्रति भेद-भाव का दोषी समाज को मानते हुए दलितों में क्रांन्ति उत्पन्न करना चाहते थे | उन्होंने भरपूर प्रयत्न किया की दलित अपने अधिकारों के प्रति जागरुक हो | ' कर्मभूमि ' में डॉ,. शान्ति कुमार कहते है- " क्या तुम ईश्वर के घर से गुलामी का बीडा लेकर आये हो ? तुम तन-मन से दुसरों की सेवा करते हो, पर तुम गुलाम हो | तुम्हारा समाज में कोई स्थान नहीं | तुम बुनियाद हो | तुम्होर ही ऊपर समाज खडा है, पर तुम अछुत हो | तुम मंदिरों में नहीं जा सकते | ऐसी अनीति इस अभागे देश के सिवा और कहाँ हो सकती है ? क्या तुम सदैव इसी भाँति पतित और दलित बने रहना चाहते हो ? | "[4]

अमृतलाल नागर ने ' नाच्चौ बहुत गोपाल ' में सामाजिक विषमता के साथ संवाद करता एवं अस्तित्व के लिये संघर्षरत दलित मध्य वर्ग चित्रित है | उनका मानना है कि दलित (भंगी) समाज के शोषण और दमन का कारण समाज निर्मित व्यवस्था है |

समकालीन हिन्दी साहित्य में दलित सन्दर्भों की दृष्टि से शैलेश महियानी का नाम उल्लेखनीय है | अहिंसा, जुलूस, हारा हुआ, संगीन भरी संध्या, माँ तुम आओ, अलाप, लाटी आदि कहानियाँ दलित जीवन संदर्भों से सम्बन्धित है |

' हत्यारे ' शैलेश महियानी के कहानी में दलितों की भावनाओं को भडकाकर राजनीति करनेवाले नेताओं की कुत्सित चेष्टाये अनावृत्त हुई हैं | इस कहानी में हरपल चन्द्र अपनी बिरादरी को क्रान्ति का आहवान करता चित्रित हुआ है, " तो मैं आप लोगों से कह रहा था कि हम हरिजन भाइयों पर जोर जुल्म की हुकूमत चलाने के वे नादिरशाही जमाने गुजर चुके, जो हमारे बाप-दादाओं के पीठों पर अपने जालिम निशान छोड गये हैं | ........ अब वक्त आ गया है कि हम हरिजन दुनियाँ में अपने नामो निशान छोड जाये " |[5]

आदिवासी विमर्श – प्रेमचंद भले ही आदिवासी रचनाकार न हो, पर उन्होंने अपनी रचनाओं के जरिये उस महाजनी सभ्यना के विरुध्द आवाज उठाई जिनका आदिवासी जीवन एवं समाज में हस्तक्षेप आज भी जारी है और जो आदिवासी दमन एवं शोषण के मूल में मौजूद है | इन महाजनों की जडे आदिवासी क्षेत्रों में न होकर सेमरी एवं बेलारी जैसे गाँवों में हैं और प्रेमचंद इनकी इन्हीं जडो पर प्रहार करते हैं | इसीलिए केदार प्रसाद मीना ने सही ही कहा है कि " प्रेमचंद, रेणु, संजीव और रणेंद्र आदि का साहित्य आदिवासी साहित्य न सही, पर आदिवासियों की समस्याओं पर लिखा गया महत्त्वपूर्ण साहित्य है "|[6]

वे इस निष्कर्ष के साथ उपस्थित होते हैं कि उनकी रचनाओं में आदिवासी जीवन की झलक उतकी ही है, जितनी उस जगह पर आदिवासी आबादी है | उनका यह भी प्रश्न है कि यदि आज की 'आदिवासी राजनीति छोटा नागपुर कारतकारी अधिनियम' में संशोधन के जरिये आदिवासियों की जमीन खरीद-बिक्री के मार्ग को प्रशस्त कर रही है, तो इसमें कोई प्रेमचंद क्या कर सकते है ? इसी प्रकार अगर आदिवासी विमर्श दलित-विमर्श का रास्ता अखियार करता है, तो किसी दिन फणीश्वरनाथ रेणु के बारे में भी कहा जा सकता है कि उन्होंने ' मैला आँचल ' में संथालों को पिटता दिखा कर आनंद प्राप्त किया या उन्हें अपमानित किया है, जो कि सत्य नहीं है |

सदगति कहानी आदिवासी संदर्भ में प्रेमचंद के लेखन में आशा की किरण की तरह देखी जा सकती है | इस कहानी में विद्रोही चेतना से लैस एकमात्र पात्र है चिखुरी गोड | वह दुखी को पंडित घासीराम के शोषण से बचाने की हर संभव कोशिश करता है, लेकिन घर्मसत्ता के आत्मसातीकरण से उपजे भय के कारण दुखी उससे निकल नहीं पाता और त्रासद मौन का शिकार होता है | उसकी मौत के बाद चमरौने में जाकर वही दलितों को इस अन्याय की खबर देता और आंदोलित करने की कोशिश करता है |

" खबरदार, मुर्दा उठाने मत जाना | अभी पुलिस की तहकीकात होगी | दिल्लगी है एक गरीब की जान लेली | पंडितजी होंगे, तो अपने घर के होंगे | ", इसके बाद पुलिस के भय से कोई भी दलित लाश उठाने नहीं जाता | इस तरह यह कहानी हिंदू धार्मिक संस्कारों से मुक्त एक गोंड के माध्यम से ब्राह्मणवाद के खिलाफ लडाई की कहानी है, जिसमें दलित और आदिवासी एकता की जरुरत की ओर संकेत भी है |

आदिवासी समस्याओं पर रणेंद्र और संजीव जैसे अच्छे लेखकों की रचनाओं के पात्रों की ऐसी डायरियों, जिनमें आदिवासी समाज का दर्द दर्ज है, को यह उनकी निजी डायरी कह कर इसके बहाने संपूर्ण रचना को खारिज कर रहे हैं | संजीव –रणेंद्र के आदिवासी इलाकों में काम करनेवाले पात्र सुदीप्त और किशन आदि सभी दिकू नहीं कहे जा सकते | इनकी डायरियाँ महज उनकी निजी डायरियाँ नहीं है | ये आदिवासी विस्थापन और उसके खिलाफ संघर्ष के दस्तावेज भी हैं, क्योंकि न तो सरकारे उन्हें दर्ज करती हैं और न विस्थापित करनेवाली कंपनियाँ | निरक्षर आदिवासी तो दर्ज कर ही नहीं सकते | ऐसे में इन लेखकों की रचना और इनके पात्रों की डायरियों का महत्व बढ जाता है | इसलिए इन लेखकों के साहित्य को ' दिकू ' साहित्य कहना आदिवासी विमर्श का दुर्भाग्य ही कहा जाएगा | जनसत्ता में प्रकशित आलेख आदिवासी विमर्श के रोडे, के जरिये केदारप्रसाद मीणा आदिवासी विमर्श को सहानुभुती-समानुभूति, के उस विवाद में उलझने से बचने की सलाह देते है, जिसने दलित-वमिर्श को साहित्य की राजनीति में ले जाकर उलझा दिया |

पिछले दो दशकों में हिन्दी संसार में आदिवासी लेखकों, विशेषकर झारखंड क्षेत्र के लेखकों ने अपनी पैठ और पहचान बनाई है | आज आदिवासी कलम की धार आँचलिक, क्षेत्रीय और राष्ट्रीय स्तर तक असरदार बन चुकी है | हेराल्ड एस-टोप्पो और रामदयाल मुंडा ने पत्र-पत्रिकाओं में अपनी नियमित उपस्थिति के जरिये ' जंगल-गाथा ' से लेखक-पत्रकार के रुप में अपनी विशिष्ट पहचान बनायी है | सामाजिक राजनीतिक विश्लेषण के लिहाज से एन.ई.होरो, निर्मल मिंज, रोज केरकेट्टा, प्रभाकर तिर्की, सूर्य सिंह बेसरा और महादेव टोप्पो आदि का योगदान अर्थपूर्ण और महत्वपुर्ण है |

आदिवासी साहित्य के उभार की प्रक्रिया को और अधिक स्पष्ट करणे हुए गंगा सहाय मीणाने कहा है कि – "1991 के बाद आर्थिक उदारीकरण की नीतियों से तेज हुई आदिवासी शोषण की प्रक्रिया के प्रतिरोधस्वरुप आदिवासी अस्मिता और अस्मित्व की रक्षा के लिए राष्ट्रीय स्तर पर पैदा हुई रचनात्मक ऊर्जा आदिवासी साहित्य है ".[8]

अंत में इतना ही कहा जा सकता है हिन्दी साहित्यकारों ने दलित और आदिवासी विमर्श की भावनाओं को अभिव्यक्त किया है और कही जगह पर वास्तविकता का चित्रण भी किया है तो कही पर जागरुकता लाने का प्रयास किया है |

**संदर्भ :**


1. डॉ. अशोक तिवारी-प्रतियोगिता साहित्य सीरीज, पृ.136
2. वही, पृ.137
3. वही, पृ.137
4. कर्मभूमि –प्रेमचंद भाग-2-पृ.19
5. शैलेश मटियानी की सम्पूर्ण कहानियाँ-3,प्रकल्प प्रकाशन, पृ.168.
6. Sarthaksamwad.blogspot.com-पृ.9
7. वही, पृ.10
8. वही.पृ.9

**Chief Editor**
**P. R. Talekar**
**Secretary**
**Young Researcher Association, Kolhapur (M.S), India**

**Editor**
**Prof. Dr. V. V. Killedar**
**Rajarshi Chhatrapati Shahu College, Kolhapur**

**Co- Editors**

| | | |
|---|---|---|
| डॉ. एस. पी. पवार | लैफ्ट.डॉ. आर.सी. पाटील | डॉ. एस. जे. आवळे |
| प्रा. एन.पी. साठे | प्रा. ए. बी. घुले | प्रा. डॉ.एम. टी. रणदिवे |
| डॉ. एन. ए. देसाई | | |

# स्वाधीनता आंदोलन और भारतीय साहित्य

संपादक :
प्रो. डॉ. रणजीत जाधव
सह संपादक :
प्रा. डॉ. दिलीप गुंजरगे, प्रा. राजेश विभुते

| | | |
|---|---|---|
| पुस्तक | : | स्वाधीनता आंदोलन और भारतीय साहित्य |
| संपादक | : | प्रो. डॉ. रणजीत जाधव, प्रा. डॉ. दिलीप गुंजरगे, प्रा. राजेश विभुते |
| © | : | लेखक |
| प्रकाशक | : | **शैलजा प्रकाशन**<br>प्रकाशक एवं वितरक<br>57 पी., कुंज विहार, II यशोदा नगर, कानपुर -11<br>Mob.: 8765061708, 9451022125<br>E-mail : shailjaprakashan@gmail.com |
| ISBN | : | 978-81-954734-9-6 |
| संस्करण | : | प्रथम 2022 |
| मूल्य | : | ₹ 725 /- |
| शब्द साज | : | शिखा ग्राफिक्स, कानपुर |
| मुद्रक | : | अनिका डिजिटल, कानपुर |


---

**Swadhinta Andolan Aur Bhartiya Sahitya**

***by : Dr. Ranjit Jadhva***

*Price : Seven Hundred Twenty five Only.*

# अनुक्रमणिका

1. चित्त जेथॉय भीति शून्य 11
- डॉ. ठाकुरदास महेंद्र

2. उत्तर प्रदेश में हिन्दी पत्रकारिता और स्वाधीनता आंदोलन 19
- डॉ. वन्दना श्रीवास्तव

3. प्रसाद के नाट्य संवादों में राष्ट्रबोध 32
-डॉ. रघुनाथ पाण्डेय

4. हिंदी उपन्यास साहित्य में स्वाधीनता संग्राम 40
-प्रा. डॉ. पठाण आयुब खान जी

5. भारत के स्वाधीनता आन्दोलन में प्रेमचंद के उपन्यासों का योगदान 46
-डॉ. काबले आशा दत्तात्रेय

6. स्वाधीनता आन्दोलन और मूक-हिंदी मराठी फिल्में
राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के विशेष सन्दर्भ में 53
-डॉ. विनोद कुमार विलासराव वायचळ 'वेदार्य'

7. स्वाधीनता आंदोलन में हिंदी भाषा का योगदान 58
-डॉ. शिवकांता रामकिसन सुरकुटे

8. राष्ट्रीय आंदोलन और हिंदी पत्रकारिता 64
- डॉ. पंडित बन्ने

9. स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी सिनेमा 67
- प्रा. डॉ. मधुकर राऊत

10. स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी फिल्में 71
प्र. डॉ. राम दगडू खलेंग्रे

11. भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में हिंदी साहित्य की भूमिका 79
डॉ. नवनाथ गाडेकर

12. स्वाधीनता आन्दोलन और देश विभाजन की कहानियाँ 83
-प्रा. प्रकाश बन्सीधर खुळे

13. स्वाधीनता आंदोलन और हिन्दी पत्र-पत्रिकाएँ 88
-श्री कुपेन्द्र राठोड़

14. हिंदी उपन्यासों में स्वाधीनता आंदोलन का चित्रण 93
-डॉ. रेविता बलभीम कावळे

15. स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी साहित्य : एक परिदृश्य 97
डॉ. नानासाहेब शं. गायकवाड 'संगीत'

# 7

# स्वाधीनता आंदोलन में हिंदी भाषा का योगदान

डॉ.शिवकांता रामकिसन सुरकुटे

14सितंबर 'हिन्दी दिवस' के रुप में मनाया जाता है और यह क्यों मनाया जाता है, यह सर्वविदित है | आज हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा है | हिन्दी को एक प्रादेशिक भाषा की हैसियत से लेकर राष्ट्रभाषा के रुप में लोकप्रिय और सर्वमान्य बनने में और फिर भारत की राजभाषा बनने में कई शताब्दियां लगी हैं | राजभाषा के रुप में हिन्दी को जो मान्यता दी गयी उसमें स्वतंत्रता-संग्राम के हमारे राजनेताओ की भूमिका महत्त्वपूर्ण रही है |यह देखकर आश्चर्य होता है कि हिन्दी के विकास के लिए उन चिन्तको, मनीषियों और नेताओं ने अभूतपूर्व कार्य किया है जो अधिकतर हिन्दीतर प्रदेश के थे | हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने का विचार सर्वप्रथम बंगाल में ही उदित हुआ और प्रारंभ से अंत तक इसे वहां के मूर्धन्य नेताओं का सक्रिय सहयोग प्राप्त हुआ | पूरे देश के लिए एक राष्ट्रभाषा हिन्दी की कल्पना करनेवालों में सबसे अग्रणी हैं बंगाल के श्री केशवचंद्र सेन जिन्होंने 1873 में अपने पत्र 'सुलभ समाचार'(बंगला) में लिखा "यदि भाषा एक न होने पर भारतवर्ष में एकता न हो तो उसका उपाय क्या है ? समस्त भारतवर्ष में एक भाषा प्रयोग करना इसका उपाया हे |"

इस समय भारत में जितनी भी भाषाएं प्रचलित हैं, उनमें हिन्दी भाषा प्रायः सर्वत्र प्रचलित है | इस हिन्दी भाषाको यदि भारतवर्ष की एक मात्र भाषा बनाए जाए तो अनायास ही (यह एकता) शीघ्र ही सम्पन्न हो सकती है | इनके अलावा अन्य अनेक राष्ट्रीय नेताओं ने प्रान्तीयता की भावना से ऊपर उठकर मुक्त कंठ से हिन्दी का समर्थन किया, जिनकी हिन्दी सेवा अविस्मरणीय रहेगी |

"स्वराज्य हमारा जन्मसिध्द अधिकार है जिसे मैं प्राप्त करके रहूंगा " का नारा देनेवाले नेता लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक का स्वाधीनता संग्राम के इतिहास में विशिष्ट स्थान है |भाषा के बारे में तिलक का विचार था कि हिन्दी ही एक मात्र भाषा है जो राष्ट्रभाषा हो सकती है | हिन्दी का समर्थन करते हुए 'नागरी प्रचारिणी पत्रिका ' में उन्होंने लिखा था "यह आंदोलन उत्तर भारत में केवल एक सर्वमान्य लिपि के प्रचार के लिए नहीं है, यह तो उस आंदोलन का एक अंग है जिसे मैं राष्ट्रीय आन्दोलन कहूंगा और जिसका उद्देश्य समस्त भारत वर्ष के लिए एक राष्ट्रीय भाषा की स्थापना करना है क्योंकि सबके लिए समान भाषा राष्ट्रीयता का महत्त्वपूर्ण अंग है, अत एव आदि आप किसी राष्ट्र के लोगों को एक दूसरे से निकट लाना चाहे तो सबके लिए समान भाषा से बढकर सशक्त अन्य कोई बल नहीं है |"[1]

साहित्य रचा है | विशेष कर मराठी भाषी सन्तों-लेखकों का अवदान स्मरणीय है | संत ज्ञानेश्वर, संत नामदेव, संत तुकाराम का नाम इस संदर्भ में विशेष उल्लेखनीय है | संपूर्ण देशभर में भ्रमण करनेवाले इन मराठी सतों के हिन्दी को स्वीकार कर हिन्दी के प्रति अपना समर्थन दिया इसका हमें ध्यान रखना चाहिए | विनोबाजी ने कहा था कि " राष्ट्रीय एकता के लिए सबसे अधिक आवश्यक अगर कुछ है तो वह एक भाषा और एक लिपी "[7]| मुझे लगता है कि हिन्दी भाषा और देवनागरी लिपि ही इसका एकमात्र समाधान है |

दक्षिण के तीर्थ स्थलों में हिन्दी ही व्यवहार की भाषा रही है | व्यापार, यातायात, शिक्षा, मनोरंजन के साधनों के कारण भी दक्षिण भारतीयों के लिए हिन्दी अपरिचित नही रही है | 1927 में सी. राजगोपालाचारी ने दक्षिण वालों को हिन्दी सीखने की सलाह दी थी | उन्ही के शब्द है "हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा तो है ही, यही जनतंत्रात्मक भारत में राजभाषा भी होगी |" रंगनाथ रामचंद्र दिवालकर ने कहा था "जो राष्ट्रप्रेमी हैं उन्हे राष्ट्रभाषा प्रेमी होना ही चाहिए |"

स्वाधीनता आंदोलन में साहित्य का योगदान वर्ष 1942 ते 1945 का समय ऐसा था जब देश में स्वतंत्रता की लहर सबसे अधिक तीव्र थी, तब राष्ट्रभाषा से ओत-प्रोत जितनी रचनाएँ हिन्दी में लिखी गई उतनी शायद किसी और भाषा में इतने व्यापक रुप से कभी नहीं लिखी गई | राष्ट्रभाषा प्रचार के साथ राष्ट्रीयता के प्रबल हो जाने पर अंग्रेजों को भारत छोडना पडा |

अंत में इतना की कहा जा सकता है कि राजनीतिक नेताओं व्दारा, धार्मिक-सांस्कृतिक, संस्थाओं व्दारा हिन्दी की सेवा की और स्वाधीनता आंदोलन में हिन्दी की अहम भूमिका रही|

**संदर्भ :**


1. Https://www.gkeexams.com
2. वही
3. वही
4. Saralmaterials.com/content id = 46
5. अशोक तिवारी-प्रतियोगिता साहित्य सीरीज, पृ.297
6. वही पृ-105-106
7. डॉ.सुरेश माहेश्वरी-हिन्दी राष्ट्रभाषा से विश्वभाषा की ओर, पृ-14



हिंदी विभाग

दयानंद कला महाविद्यालय, लातूर

मो.नं. 7776989158

ई-मेल : surkute05@gmail.com


•

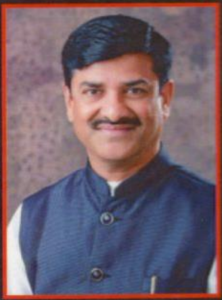

## डॉ. रणजीत जाधव

**जन्म :** जून 1971, चिलखा, तहसिल : अहमदपूर जि.लातूर (महाराष्ट्र)

**शिक्षा :** एम.ए.हिन्दी (1994) पी.एच.डी. (2003)

**लेखन :** 1) हिन्दी साहित्य तथा भाषा को महाराष्ट्र की देन, 2) स्वातंर्त्र्योत्तर हिन्दी नाटक, 3) हिंदी साहित्य विमर्श, 4) दक्षिण भारतीय संत परम्परा, 5) संत तुकाराम की हिंदी पदावली, 6) हिंदी भाषा विविध आयाम 7) भाषा, साहित्य और संस्कृति चिंतन

**सम्पादन :** 1) भाषा तथा भाषा विज्ञान के अद्यतन आयाम, 2) संत साहित्य और वर्तमान जीवन, 3) हिंदी मराठी संत साहित्य में प्रगतिशील चेतना, 4) 'भारतीय भाषा और साहित्य चिंतन', 5) डॉ.सूर्यनारायण रणसुभे रचनावली, 6)हाशिए का समाज और हिंदी – मराठी साहित्य, 7) विलासदीप विशेषांक, 8) हिंदी साहित्य में संवैधानिक मूल्य, 9) स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी मराठी कविता, 10) स्वाधीनता आंदोलन और भारतीय साहित्य

**शोध–निर्देशक :** स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय,नांदेड की ओर से 6 शोध छात्रों को पी.एच.डी. घोषित

**विशेष :** 1) अध्यक्ष, संत कबीर प्रतिष्ठान,लातूर, 2) कार्यकारणी सदस्य, हिन्दी साहित्य परिषद,लातूर, 3) राज्य, राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठियों में आलेख वाचन तथा अतिथि के रुप में निमंत्रित, 4) हिन्दी की स्तरीय पत्र–पत्रिकाओं में 60 लेख प्रकाशित, 5) आकाशवाणी परभणी केन्द्र से कार्यक्रमों का प्रसारण, 6) संयोजक : कबीर प्रतिष्ठान, लातूर द्वारा आयोजित पांच संगोष्ठियाँ तथा प्रतिवर्ष 'कबीर व्याख्यानमाला' का आयोजन

**पुरस्कार / सम्मान :** 1) महाराष्ट्र राज्य हिन्दी साहित्य अकादमी,मुंबई का 'आचार्य नंददुलारे वाजपेयी पुरस्कार 2017', 2) हिन्दी समर्पण सम्मान – 2015 (साहित्यकार संसद,इलाहाबाद) 3) 'साहित्य भूषण पुरस्कार–2011' (धर्मवीर बहुउद्देशिय सेवाभावी संस्था, लातूर)

**संप्रति :** प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, स्व.व्यंकटराव देशमुख महाविद्यालय, बाभलगाँव ता.जि.लातूर (महाराष्ट्र)

**संपर्क :** 'शब्दांकुर', यमुना सोसायटी, पुराना औसा रोड, लातूर–413531 (महाराष्ट्र)

**मो० :** 9421374116 **ई–मेल :** jadhavranjit500@gmail.com

शैलजा प्रकाशन

57–पी, कुंज विहार–II, यशोदा नगर, कानपुर

Mob.: 9451022125 • E-mail: shailjaprakashan@gmail.com

ISBN : 978-81-954734-9-6

9 788195 473496

₹725/-